various branches of public services have been arranged. So far, information received relating to the employment of Manipuris in the All India Services since 1947 after the merger is as follows: IAS—SE—nil, ST—17, General—2; IPS—SC—nil, ST-10, General-1; IFS--SC-nil, ST-8, General-nil. But in the promotion of services, the information is: IAS--SC-1, ST-14, General-37; IPS--SC-nil, ST-3, General-23; IFS--SC-nil, ST-2, General-14. In the more employment opportunities giving departments of the Government of India, like Railways, Telecommunications, Defence, Airways, etc, opportunities for Manipuris are not available.

The result of negligence in implementation of the Merger Agreement by the Government of India, every year in Manipur a bandh is called by the younger generation on the 15th October as a mark of protest against the merger with India and against the negligence in implementation which is there even now.

I now draw the attention of the present Central Government led by Shri Atal Bihari Vajpayeeji to give a special attention to the Merger Agreement of Manipur which gives a separatist feeling to the younger gengeration due to the unemployment situation. Thank you, Sir.

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): सभापति जी, आई एम ऑन् ए प्वायंट् ऑफ् क्लैरिफिकेशन। आपने जो अभी कहा कि स्पेशल मेंशन के अंतर्गत दर्ज ड्रिंकिंग वाटर का इश्यू, जिसमें कि मेरा नाम भी है, वह अभी शॉर्ट ड्यूरेशन डिसकशन में जाएगा। इस संबंध में मेरा सबमिशन इतना ही है क जब शॉर्ट ड्यूरेशन डिसकशन हो तब जितने लोगों का नामस्पेशल मेंशन में दिया गया है उनका नाम उसमें इन्क्लूड किया जाए।

श्री सभापति: इसके लिए आपको सेपरेट नौटिस देना पड़ेगा। ...(व्यवधान) हरेक आदमी को सेपरेट नौटिस देना पड़ेगा।

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे: नहीं-नहीं, हमने तो स्पेशल मेंशन का नौटिस दिया हुआ है।

श्री सभापति: स्पेशन मेंशन का नहीं, शार्ट ड्यूरेशन डिस्कशन के लिए स्पेशली आपको अलग से लिखना पड़ेगा।-

Abominable Assault on Indian Diplomat in Islamabad

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): सभापति महोदय, मैं सदन का ध्यान एक अत्यंत दुखदायी घटना की ओर दिलाना चाहता हूं। कल पाकिस्तान के इस्लामाबाद नगर में भारतीय हाइ-कमीशन के एक डिप्लोमेट श्री बी॰एस॰ रावत को बहुत बुरी तरह से पीटा गया जिस कारण उन की हड्डियां टूट गयीं और उन के साथ बहुत ही दुर्व्यवहार किया गया। जो खबरें अखबारों में छपी हैं, उन के मुताबिक किसी व्यक्ति द्वारा श्री रावत को कहा गया कि वह उन के साथ मस्जिद में चले और उन के इंकार करने पर उन को बहुत बुरी तरह से पीटा गया। इस घटना को पचासों लोग देख रहे थे, परंतु किसी ने बीच में दखल नहीं दिया।

सभापति महोदय, आज हमारे हाइ-कमीशन के सभी एम्लाई वहां पर बहुत ही आतंक के वातावरण में जिंदगी जी रहे है और यह कोई पहला वाक्या नहीं है। साल-डेढ़ साल पहले भी वहां हमारे एक डिप्लोमेट की पत्नी को छुरा घोंपकर उन के ऊपर प्राणघातक हमला हुआ था महोदय, उस समय जब इस संबंध में सवाल पूछा गया था तो श्री गुजराल साहब द्वारा जोकि उस समय विदेश मंत्री थे, यह जवाब दिया गया था कि..

"There were eight cases of misbehaviour and physical assault--six officials and two family members--by the pakistani intelligence during the last three years."

तीन सालों में 8 घटनाएं हुई और उन्होंने आगे कहा कि-

"The Government have, in all cases, lodged a strong protest with the Government of Pakistan and have demanded that Pakistan should take all necessary steps for the safety and security of our personnel" Regrettably, it appears that the Pakistani authorities are not taking effective measures to control the intimidating and criminal activities of their intelligence agencies against our officials in Islamabad. We have informed Pakistan that the recurrence of such incidence cannot but negatively impact on Indo-Pakistan relations.

महोदय, यह जवाब वर्ष 1996 में दिया गया था जब कि हमारे राज-दूतावास के एक अधिकारी की पत्नी को छुरा घोंपा गया। उस समय हम आशा करते थे कि पाकिस्तान की ओर से सिविलाइज्ड बिहेवियर किया जाएगा।

सभापति महोदय, पाकिस्तान एक आतंकवादी देश है, यह बात अलग है। परंतु सभ्यतापूर्ण व्यवहार को छोड़कर इस तरह का पाशविक व्यवहार किया जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। पिछली बार जब ऐसी घटना हुई थी तो अखबारों में छपा था कि मिनिस्ट्री ऑफएक्स्टर्नल अफेयर्स के अधिकारियों ने इस बात पर बड़ा रोष जताया था कि उन को कहा जाता है कि ऐसे मामलों को प्ले-डाउन' किया जाए। भारत और पाकिस्तान के रिश्ते बने रहें, इसलिए ऐसी घटनाओं को प्ले-डाउन किया जाय। सभापति महेदय, भारत स्थित पाकिस्तान दूतावास में ऐसा कांड कभी नहीं हुआ, परंतु पाकिस्तान में ऐसी घटनाएं लगातार होती रहीं हैं और होती जा रहीं हैं और हर बार इन के संबंध में यह कहना कि हम गंभीरता से ले रहे हैं, काफी नहीं हैं। महोदय, आज कोई भी व्यक्ति पाकिस्तान राज-दूतावास में काम करने के लिए तैयार नहीं होता। वह सब से खराब जगह मानी जाती है। वहां तैनात स्टाफ के पीछे इंटेलीजैंस एजैंसियां और दूसरे लोग लगे रहते हैं। वहां उन के कोई मानवाधिकार नहीं होते, न कोई स्वतंत्रता होती है।

सभापति महोदय, मैं चाहता हूं कि ऐसी गंभीर स्थिति पर सारे सदन को चिंता व्यक्त करनी चाहिए और विदेश मंत्रालय को बहुत कठोर कदम उठाने चाहिए।

SHRI PARAG CHALIHA (Assam): Sir, I wanted to speak on this particular subject in the Zero Hour. But, I was permitted only in the Special Mentions. my esteemed colleague has already said much and I have nothing more to add. But, all of us must share the concrn that our diplomatic practices and diplomatic relationships have been affected. We should not forget the whole thing by merely saying that we have expressed our regrets.

Therefore, I strongly support Mr. Malhotra's pleading that we should adopt a resolution expressing our grave concern at the repeated use of malpractices by Pakistan against our diplomatic personnel. We shoul also request Pakistani aurthorites not to indulge in this sort of thing in future.

SHRI GURUDAS DAS GUPTS (West Bengal): I totally agree with the gravity of the situation. Unfortunately, the political confrontation or the policy of political confrontation is degenerating into physical assault on diplomats against all international norms and conventions. Therefore, it is a matter of concern and we have no hesitation in denouncing and condemning this cowardly act. While doing so, I call upon the Government of Pakistan to take note of the serious development which is against all forms of notion of civilized life. Pakistan should take note of it and act appropriately and accordingly so that the diplomatic work that the Indian mission staff has to do ther can be carried out. At the same time, Sir, India is a great nation. Let us face the cowardly act of a number of miscreants in Islamabad, whether abetted or not is not known to me. We have discussed this in this House with restraint and dignity. All of us agree on this. That is, to this extent we should do. And we should also request Goverernment of India to put on diplomatic pressure to lodge protest in a diplomatic way, in all that is possible under rules and conventions of diplomacy and try to bring Pakistan and the people of Pakistan to sense.

श्री एस० एस० अहलुवालिया (बिहार): सभापति महोदय, प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा जी ने जो मुद्दा यहां उठाया है, यह एक गंभीर मुद्दा है और एक शर्मनाक घटना है। महोदय, जबसे विश्व में सभ्यता शुरू हुई है और इस सभ्यता को मद्देनजर रखकर डिप्लोमेटिक कोंर्स शुरू हुए हैं, कूटनीतिज्ञों का जन्म हुआ है और जब एक दूसरे देश से प्रेमभाव रहता है तो यह कूटनीति चलती है। आज शर्म की बात यह है कि एक पर एक घटनाएं होती जा रही हैं और पाकिस्तान का माहौल कुछ ऐसा बनता जा रहा है या बनाया जा रहा है कि वहां कौमी जुनून को भड़काया जा रहा है, भड़काऊ भाषण हो रहे हैं, जलसे हो रहे हैं और आज हमारे हाई-कमीशन के आफीसर्स की जान और माल को खतरा बना हुआ है।

महोदय, इस पर हमारी सरकार ने जो कार्यवाही अभी तक की है कि पाकिस्तान के हाई-कमीशन को बुलाकर उनको कॉशन किया है, तो बात यहीं नहीं अटक जाती क्योंकि यह पहली घटना नहीं है, ऐसी घटनाएं कई बार घट चुकी है। हमारे कूटनीतिज्ञों के परिवार के सदस्यों पर भी खूनी हमले हुए हैं। आज जो वहां पर एक ऐसा माहोल जा रहा है कि भारत और भारतवासियों को उनका दुश्मन माना जा रहा है या उनके खिलाफ माना जा रहा है। यह एक खराब पहल है मैं समझता हूं कि सरकार को इसकी भर्त्सना करनी चाहिए, सदन को इसकी भर्त्सना करनी चाहिए और सिर्फ भर्त्सना ही नहीं उनको चेतावनी भी देनी चाहिए कि आईंदा किसी भारतीय कूटनीतिज्ञ के साथ अगर ऐसा दुर्व्यवहार हुआ तो उसे अच्छी नजर से नहीं देखा जाएगा।

महोदय, मैं समझता हूं कि पूरा सदन इसमें समर्थन करते हुए ऐसी कोई एक चेतावनी उन्हें देगा। धन्यवाद।

SHRI KULDIP NAYYAR (Nominated): I rise to suppot Mr. Malhotra. I think, the atmospher in pakistan as I see from the papers, is war like, is hysterical and anti-India. I think in the atmosphere in which these incidents are happening, and may be many more will happen, is very reprehensible and sends us a warning. But, we on our part should show restraint and we should continue to behave in a very civilized and in a very dignified manner. But I do hope that this House can possibly pass a resolution or say something whereby a word will go from her that such things are very reprehensible, condemnable and they should not be tolerated.

SHRI NILOTPAL BASU (WEST BENGAL): Mr. Chairman, sir, we share the sentiments expressed in the House. As we have been saying time and again - earlier also we said this, in the context of the other debate—there is an overall deterioration in the atmosphere there. Therefore, a great restraint should have to be exercised and all provocations should be avoided. We should deal with the matter in a dignified manner, in terms of diplomatic initiatives. We should not go in for some kind of a confrontationist response on this. Our Government should take it up with the Government of Pakistan.

This is the time when the Government should act with maturity. There is already a news that the two Governments are going to talk with each other on the kind of situation that has been generated. This sort of developments and incidents should be avoided at all costs.

Thank you, Sir.

श्री नरेन्द्र मोहन (उत्तर प्रदेश): सभापति जी, जिस समस्या पर चर्चा चल रही है वह इतनी गंभीर है कि उस पर निश्चित रूप से इस सदन को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करना ही चाहिए। यह पहली बार नहीं हुआ जबकि पाकिस्तान में भारतीय कूटनीतिज्ञों के इस प्रकार का व्यवहार किया गया है, अनेक बार ऐसा हो चुका है। उनके साथ ही नहीं, उनके परिवार के साथ उनके बच्चों के साथ, उनकी महिलाओं के साथ पाकिस्तान में अत्याचार हुए और ये घटनाएं निरंतर बढ़ती जा रही हैं। हमारे यहां केवल मात्र उनके राजदूत को बुलाकर जो एक प्रकार से प्रतिवाद कराया जाता है, इससे काम नहीं चला। मेरा विश्वास है कि संभवत: हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने इस विषय पर पाकिस्तान के प्रधान मंत्री से बातचीत भी की थी, लेकिन अब बातचीत के रास्ते उच्चस्तर पर तो लगभग बंद से पड़े हुए हैं, ये रास्ते जब खुलेंगे, तब खुलेंगे, लेकिन पाकिस्तान में जो भारतीय उच्चायोग है या दूतावास है, उसमे अगर ऐसी घटनाएं बढ़ती हैं तो यह बहुत चिंताजनक बात है। जैसा कि मल्होत्रा जी ने कहा, वहां पर भारतीय कूटनीतिज्ञों का जीवन खतरे से भरा हुआ है और उन पर यह खतरा बढ़ता जा रहा है। इस खतरे को देखते हुए निश्चित रूप से एक प्रस्ताव तो पास किया ही जाना चाहिए साथ ही भारत सरकार को पाकिस्तान को एक लिखित चेतावनी इस संबंध में भेजनी चाहिए।

श्री ओंकार सिंह लखावत (राजस्थान): सभापति महोदय, यह जो विषय हमारे सामने है, इसमें पाकिस्तान की मंशा को समझना आवश्यक है। यह घटना हमारे राजनयिकों के साथ ही नहीं बल्कि जो हमारे वहां पर तीर्थ-यात्री गए, जो पाकिस्तान के अंदर लोग गए, उनके साथ कल घटनाएं हुईं। स्ट्रेजन्स के नाते उनके साथ कुछ लोगों ने घूमते-फिरते मार-पीट की और हिंसा की घटनाएं हुई हैं। हमारे यहां, मैं जिस शहर से आता हूं, अजमेर में, वहां प्रतिवर्ष ख्वाजा साहब की दरगाह में, उर्स में भाग लेने के लिए और अन्य अवसरों पर श्रद्धा अर्पित करने के लिए पाकिस्तान नागरिक आते हैं, हम अनका नागरिक अभिनन्दन करते हैं, उनको भेट प्रस्तुत करते हैं, उनको माल्यार्पण करते हैं, उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं और उनको किसी प्रकार की परेशानी न हो, यह भी देखते हैं क्योंकि सामान्य नागरिकों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय क़ोड के तहत भी और मानवीय दृष्टिकोण के नाते भी व्यवहार ठीक होना चाहिए।

इसलिए, माननीय सभापति जी, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि अगर मान लीजिए पाकिस्तान केवल इन बातों से और बुलाकर के समझाने से और विरोध-पत्र देने से भी न माने तो फिर उचित समय पर उचित कदम उठाने से नहीं चूकना चाहिए। हमारे राजनयिकों का मनोबल न गिरे, हमारे लोग जो वहां पर हैं, उनका मनोबल न गिरे, हमारे लोग जो जा रहे हैं, उनके मन में किसी प्रकार का डर पैदा न हो, इसके लिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार को उचित समय पर उचित कदम उठाना चाहिए।

...(व्यवधान)....

MR. CHAIRMAN: Mr. Basu, please sit down. I am hearing everything. You leave it to me. Shrimati Jayanthi Natarajan, please.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, I would like to join my colleagues who have spoken before me in expressing my outrage and horror at the attack on our diplomat in Pakistan. At the same time, I would like to call upon the Government to act with maturity and restraint and tell Pakistan in no uncertain terms that we would not tolerate such attacks on the life and property of our diplomats.

Unfortunately, Sir, the international community has not looked upon us with the kind of sympathy that this would have ordinarily generated. Perhaps, we have not handled out international relations, our foreign relations, as well as we should have. Therefore, I feel that in order that this matter merits the gravest concern which it should merit, we should avoid hysteria in our country.

We should behave with maturity, with dignity, with restraint. The kind of dignity and restraint that India has always behaved with in all these fifty years has made us stronger in the international community, not less strong. Today, Sir, if at the highest levels of the Government this maturity and restraint is not forthcoming, I am afraid such acts will continue to take place all over the world against India citizens, and he blame will naturally be laid by the international community at our own doorstep, instead of holding it against the people who have actually perpetrated such a dastardly act. Therefore, Sir, I would like to join my colleagues in expressing grave reservation and sorrow over this incident. I want to say that the people of India are united as one in standing behind our diplomats and in urging the Government to take steps to protect their lives and property. The Government should express to Pakistan its concern. But, I think senior Members of the Government and other people in positions of responsibility should exercise the utmost restraint and maturity and refrain from politicising this matter or allowing it to deteriorate further into some show of strength which will not help anybody.

श्री खान गुफ्रान जुहीदी: सदर साहब, प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा की ओर से जो स्पैशल मैंश हुआ है और अपने साथियों के जज़बात से हम अंहगी करते हुए मैं यह बात कहना चाहता हूं कि हमारा नुमाइंदा पूरे हिन्दुस्तान की नुमाइंदगी करता है और उसके खिलाफ किसी तरह की कोई बात, किसी तरह की बेइज़्ज़ती इसे हम पूरे हिन्दुस्तान की बेइज़्ज़ती समझते हैं और अपनी हत्तक समझते है। सदर साहब, बेनल अक्वामी कवानीन के मुताबिक यह फैसला हो चुका है कि सिफारिती नुमाइंदों के साथ इस तरह का बिहेवियर नहीं होना चाहिए लेकिन नफरत के आधार पर बने हुए मुल्क से तहजीब की उम्मीद करना, मैं समझता हूं कि ठीक नहीं है। लेकिन उसके साथ-साथ यह भी करना पड़ेगा और बहुत सफाई के साथ करना पड़ेगा कि अगर कोई टीम फाउल खेल खेल रही है और हम अच्छा खेल खेलते जाएं उसके साथ, तो हम क्या सही सिम्ट तक उसके ले जा पाएंगे? नहीं ले जाए पाएंगे। इसलिए जरूरी है कि हम कोई रेजोल्यूशन पास करें।

हमारे एक साथी ने अभी कहा कि उनके हजारों लोग यहां आते हैं, फनकार आते हैं, जाएरीन आते हैं, दूसरे नुमाइंदे आते हैं, सिफारिती नुमाइंदे यहां मौजूद हैं उनके। हम अपनी तहजीब का रास्ता नहीं छोड़ेंगे लेकिन अगर वे अपनी तहजीब को खराब करना चाहते हैं तो उसके लिए कोई न कोई एवेन्यू हमको इस्तेमाल करना पड़ेगा। डिप्लोमेटिक तरीके पर बेनल अक्वामी जो मुल्क हैं, हमें उनके ऊपर दबाव डालना पड़ेगा कि वे इस तरह का बिहेवियर न करें। हमको इंग्लिश-अंग्रेजी में नहीं आना क्योंकि इंग्लिश अंग्रेजी से हमारा कोई फायदा नहीं है। वे इंग्लिश-अंग्रेजी करना चाहते हैं, यह उनका मकसद है। वह उनका एक मकसद है, उसको हमें समझना होगा और हमें बहुत ही गंभीरता और तदब्बुर के साथ इस मामले से निपटना होगा और बेनल अक्वामी स्तर पर भी उसको देखना होगा और सिफारिती स्तर पर भी उसको देखना होगा। वक्त और जरूरत पड़े तो बद-तहजीबी का जबाव किस तरह दिया जाता है, इसका भी ख्याल रखना पड़ेगा। इन शब्दों के साथ अपने साथियों के जज़बात के साथ मैं इत्तफाक करता हूं।

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, the House is united in expressing the feelings of revulsion. We should behave as a mature nation and a responsible House. Passing of a resolution by this House is too serious a matter which should not be done. Expressions given here will surely be carried to Pakistan by the media. That is qulte sufficient. I think we should confine ourselves to that for the time being. The hon. Minister of State is here. If she would like to intervene and give an information, I would request her to tell us what the Government of India has done.

THE MINISTER OF STATE IN THE

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI VASUNDHRA RAJE): I can appreciate the concern expressed by all the hon. Members of this House perfectly. As you have just mentioned, it is a sensitive issue. I was also just about to say that perhaps we should leave it at this point as the discussion has taken place.

This feeling will be conveyed. However, there are a few facts which I have and which I would like to share with the House.

Shri B.S. Rawat, an Attache in the High Commission in Islamabad, was assaulted and badly beaten in front of his residence in Islamabad on the morning of May 31. Shri Rawat was walking from his residence to the house of a colleague when an individual, reportedly a security guard of a neighbouring house, accosted him and beat him up with a **lathi.** Shri Rawat suffered serious injuries, including head injuries and fractures in both his arms. He has been hospitalised and is recovering. The circumstances of the assault are very disturbing.

The High Commissioner of Pakistan was summoned to the Foreign Office Yesterday. Our Foreign Secretary lodged a strong protest at this very serious and abnormal incident, which is completely unacceptable. The High Commissioner was told that the security of our Mission is the responsibility of Pakistan and clearly the Pakistani authorities failed in providing the required security, because of which this incident occurred. The High Commissioner was asked to convey our protest to his Government and it was demanded that Pakistan ensure that full security is provided to our Mission personnel.

The Pakistan High Commissioner, while stating that his Government was providing security to our personnel and that this incident was only of an individual occurrence, expressed regret. He also assured that a full investigation will take Place.

Security of our Mission in Pakistan remains a matter of concern. We will continue to demand of Pakistan that it fulfil its obligations under international conventions and the bilateral code of conduct in ensuring full security to our Mission in Islamabad.

Rampant Extortions and Murders by Insurgents in Meghalaya

SHRI ONWARD L. NONGTDU (Meghalaya): Sir, I would like to bring to the notice of this august House and the Government a matter of grave public importance, which appeared as news articles in one of the English local dailies of Meghalaya known as **The shillong Times**, dated 21st May, 1998 and 9th May, 1998 under captions: (1) "Meghalaya goes the Nagaland way" and (2) "Meghalaya, a corridor for militants".

In these news items, the factual statements of the sorry state of affairs of insurgent activities in Meghalaya was brought to light. In these it was stated: "May 1998 is a nightmarish month for a lot of local businessmen, tribals and non-tribals." It was also stated that: "Other professionals of the State, like engineers, doctors and entrepreneurs have become the target of mass collection spree."

The Daily further stated: "Insurgency, which is a more respectable name for extortion, has become the only thriving industry in the North-East—an industry that ploughs back nothing to the Exchequer, but the proceeds of which are illegally channelised towards enriching the Chinese and Thai gun merchants and the I.S.I., who are the enemies of this country."

The Chief Minister of the State did himself state at a meeting of the Chief Ministers from the North-East here in Delhi on 8th May, 1998 and I quote: "The militants are also using Shillong and other parts of the State as a corridor for their entry or exit to camps in neighbouring Bangladesh. Though the matter is known to us, it is not always possible to identify them." Sir, these words stated by the Chief Minister are very very significant. He said though the matter is known to us, it is not always possible to identify them.

Only on the 13th of May, an elderly merchant of Jowai town, one of the towns in the State, was mercilessly shot and killed in his own shop in broad day-light. A number of highway robberies are going on almost everyday. As I stated, Mr. Chairman, Sir, the Chief Minister himself has stated that it is not always possible to identify them,...